

कबीर का संदेशः



डॉ. मुकेश नायक

तो झूठ

मैं का जानूँ राम कूँ, नैनोँ कबहुँ न दीठ ॥ ‘

केवल एक काव्य-पंक्ति नहीं, बल्कि गहन आध्यात्मिक दर्शन का सार है. इस दोहे में कबीर उस परम सत्य की चर्चा करते हैं जिसे शब्दों की सीमाओं में बाँधा नहीं जा सकता. वे स्वीकार करते हैं कि ईश्वर इतना व्यापक और असीम है कि उसका कोई भी वर्णन उसे पूर्णतः व्यक्त नहीं कर सकता.

कबीर कहते हैं कि यदि वे ईश्वर को ‘भारी’ या महान कहें, तो कहीं न कहीं उसकी अनंतता को सीमित करने का भय है. यदि उसे ‘हलका’ या तुच्छ कहें, तो वह असत्य होगा. इसलिए वे विनम्रता के साथ स्वीकार करते हैं कि जिस परम सत्ता को उन्होंने अपनी आँखों से नहीं देखा, उसके बारे में अंतिम सत्य का दावा कैसे कर सकते हैं.

यह दृष्टिकोण वेदांत और उपनिषदों की उस परंपरा से गहराई से जुड़ा है, जिसमें ब्रह्म को ‘अनिर्वचनीय’ कहा गया है—अर्थात् जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता. परम सत्य सभी सीमाओं, अवधारणाओं और परिभाषाओं से परे है. मनुष्य जितना उसे परिभाषित करने का प्रयास करता है, उतना ही अनुभव करता है कि वह हर कल्पना और

शब्दों में नहीं, अनुभव में खोजो सत्य

कबीर का संदेश अत्यंत सरल है—सत्य को शब्दों में कैद करने का प्रयास मत करो, उसे अनुभव करो. अहंकार का त्याग करो, विनम्रता को अपनाओ और अपने हृदय को निर्मल बनाओ. जब मनुष्य अपनी सीमाओं को स्वीकार करता है, तभी वह अनंत की यात्रा पर आगे बढ़ पाता है.

विचार से परे है.

यह दोहा विनम्रता का भी महत्वपूर्ण संदेश देता है. मनुष्य अक्सर अपने ज्ञान, उपलब्धियों और अनुभवों पर गर्व करने लगता है. उसे लगता है कि वह संसार और उसके रहस्यों को पूरी तरह समझ चुका है. कबीर इस अहंकार को चुनौती देते हुए कहते हैं कि जब स्वयं परम सत्य को पूर्ण रूप से समझना संभव नहीं, तब कोई व्यक्ति संपूर्ण ज्ञान का दावा कैसे कर सकता है?

वास्तविक ज्ञान वहीं से प्रारंभ होता है जहाँ अहंकार समाप्त होता है. जब मनुष्य यह स्वीकार करता है कि अभी बहुत कुछ जानना शेष है, तभी उसके लिए सच्ची समझ के द्वार खुलते हैं. कबीर का ‘मैं का जानूँ’ अज्ञान की स्वीकारोक्ति नहीं, बल्कि बौद्धिक और आध्यात्मिक विनम्रता की अभिव्यक्ति है. यही भाव गहन ज्ञान की ओर ले जाता है.

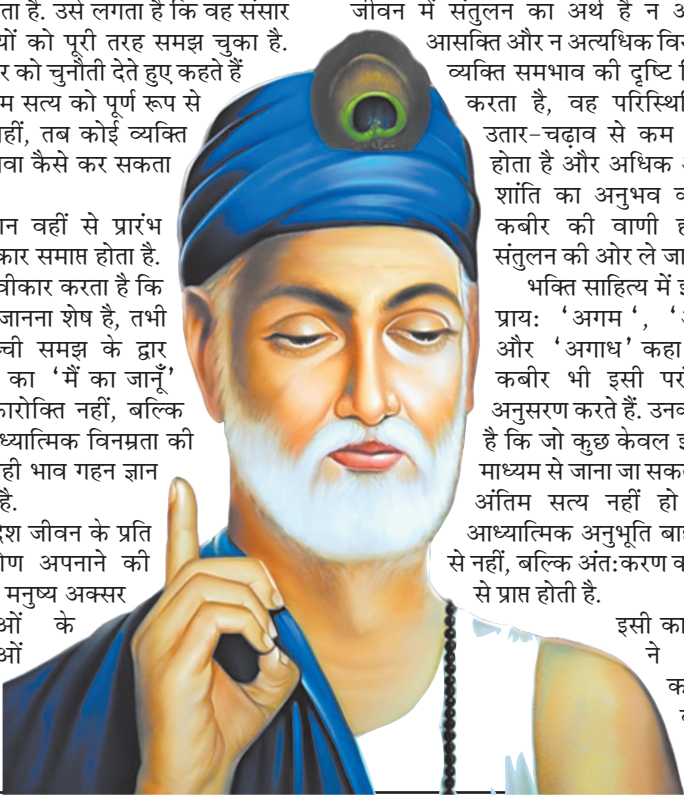
कबीर का संदेश जीवन के प्रति संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा भी देता है. मनुष्य अक्सर अपनी धारणाओं के आधार पर वस्तुओं और परिस्थितियों का मूल्यांकन करता

है. किसी को अत्यधिक महत्व देता है और किसी को पूरी तरह निरर्थक मान लेता है. कबीर संकेत करते हैं कि सत्य इन दोनों अंतियों से परे है.

जीवन में संतुलन का अर्थ है न अत्यधिक आसक्ति और न अत्यधिक विरक्ति. जो व्यक्ति समभाव की दृष्टि विकसित करता है, वह परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव से कम प्रभावित होता है और अधिक आंतरिक शांति का अनुभव करता है. कबीर की वाणी हमें इसी संतुलन की ओर ले जाती है.

भक्ति साहित्य में ईश्वर को प्रायः ‘अगम’, ‘अगोचर’ और ‘अगाध’ कहा गया है. कबीर भी इसी परंपरा का अनुसरण करते हैं. उनका मानना है कि जो कुछ केवल इंद्रियों के माध्यम से जाना जा सकता है, वह अंतिम सत्य नहीं हो सकता. आध्यात्मिक अनुभूति बाहरी दृष्टि से नहीं, बल्कि अंतःकरण की शुद्धता से प्राप्त होती है.

इसी कारण संतों ने बाहरी कर्मकांडों को अपेक्षा



स्त्री की त्रासदी से मुक्ति के लिए कामना की कहानियां



डॉ. दुर्गा सिन्हा ‘उदार’

इनकी भाषा-शैली इतनी सरल व सहज है कि मन पर अपनी छाप छोड़ जाती हैं. हर कहानी अलग कथ्य व शिल्प से सजी नवीन विषय और नए परिवेश की रोचक घटनाओं का समुच्चय है.

जीवन के नए आयाम का परिदृश्य पाठकों की कल्पनाशीलता को एक वृहत् आकाश प्रदान करता है. समस्यार्ण हैं तो उनके समाधान भी हैं.

शीर्षक कहानी ‘इक्कीसवाँ मिनट’ वर्तमान समय को सामने लाती है. आज का युवा पुरानी पीढ़ी से सीधे हटने की मांग कर बैठता है—

‘तुम हटो... हमें आगे आना है...’ वह प्रतीक्षा नहीं

साहित्यकार संतोष श्रीवास्तव के कहानी संग्रह ‘इक्कीसवाँ मिनट’ में शामिल चौदह कहानियाँ अपने अनूठे विषय प्रसंगों, अभिनव घटनाओं और चुटौती संवादों से न केवल पाठकों का ध्यान खींचती हैं वरन पाठकों को अपने साथ बाँधे रखती हैं. रोचकता व नवीनता के साथ

पुस्तक समीक्षा

करता. समय बदला है समय की मांग बदली है. यह वाक्य भी उसूलों के पक्के इंसान का व्यक्तित्व दर्शाते हैं— ‘मैं काम करने के पैसे लेता हूँ काम छोड़ने की रिश्तत नहीं’ कथ्य-शिल्प और अभिव्यक्ति पर खरी उतरती कहानी लगती है. भाषा सरल-सहज सार्थक संदेश सम्प्रेषण करता है. इतना सजीव और मार्मिक चित्रण लेखक के परकीय प्रवेश से ही संभव है. खुद को परिस्थितियों के अनुकूल ढालना सब के बस की बात नहीं’ बहुत सही कहा आपने.

इसी तरह विस्थापन की त्रासदी दर्शाती ‘क से कश्मीर’ कहानी वास्तविकता से रूबरू कराती है. आतंकी जेहादियों की कहर बरसाती गोलियाँ, निर्दोष हिन्दू मुस्लिमों की हत्या. ओह! कितनी क्रूरता. खून की होली खेलता आदमी. ‘धर्म की लड़ाई’ ? धर्म लड़ाता भी है? ‘जोखिम’ कहानी में बेकसूर मजदूर सीताराम उन सब भूमिका में हैं जिन्हें अनावश्यक ही फँसा कर पकड़ा और मारा जाता है. खुद की क्रीमीज पर सफलता का तमगा लगाने की लालसा में एक निर्दोष मेहनतकश इंसान की बलि चढ़ा देना यथार्थ को आईना दिखाती कहानी.

‘मोह भंग’ धर्म के नाम पर पनपते घोर अधर्म का पर्दाफाश करती कहानी है जो उस कड़वे सत्य को उजागर करती है जिसे कभी स्वीकारने का मन नहीं

करता. वर्तमान तो कलियुग कहलाता है किन्तु यह सत्य तो हर युग का सत्य है. ‘ये इश्क़ नहीं आसों’ पढ़ते हर डी.एच.लॉरेंस का कथन याद आता है कि ‘मैरिज इज़ ए लीगल प्रॉस्टीट्यूशन’ कितना सही है लगता है. जहाँ स्त्री केवल देह मात्र समझी जाती है. मुक्ति की कामना तो करेगी ही.

‘पंचश्री’ कहानी इंसान के उड़ान के पंखों को बीच में ही कतर देने का एक कड़वा सच है. जिसे झेलना स्त्री के ही हिस्से में क्यों आता है ? पुरुष तो दूसरे उपाय ढूँढ लेता है कहीं रुकावट नहीं महसूस करता. क्यों स्त्री को ही सारी जवाबदारी बन जाती है ? यह कहाँ का नियम है ? किसने गढ़े हैं ये नियम ? इसके उलट भी तो होना चाहिए कभी. हमारी लेखनी भी तो समाज के नियमों के अधीन ही चलती है. उस व्यवस्था को तोड़ कहाँ पाती है. कोई नया पैमाना कहाँ निर्धारित कर पाती है ?

स्त्री की त्रासदी की जीवंत तस्वीर उकेरती हर कहानी अपने आप में बहुत कुछ कहने, सहने और बदलने की दिशा का निर्देश करती है. ये कहानियाँ जीवन की सच्चाई का बयान करती हैं. अनेकों प्रश्न हैं जिनके समाधान की, मुक्ति की कोई राह भी नहीं दिखती. उसे उसी तरह हर बार जीने को विवश जिन्दगी भी अपनी गति से चलती ही रहती है.

‘इक्कीसवाँ मिनट’ संग्रह हर पाठक के हृदय को आलोकित करने वाला संग्रह है.



इक्कीसवाँ मिनट
(कहानी संग्रह)
संतोष श्रीवास्तव
कीमत - 300 रुपए
अद्विक प्रकाशन, नई दिल्ली

एक पाती पापा के नाम



सुचिता सकुनिया

हमेशा परदे के पीछे खड़ा रहा. आज आपकी नहीं, आपके पीछे छुट गए उस व्यक्ति की बात करना चाहती हूँ, जिसे दुनिया में पिता कहा, और जिसने धीरे-धीरे खुद को भूलकर हम सबको याद रखा. बचपन में मैंने आपको बस पापा की तरह देखा—हर सवाल का जवाब, हर डर का समाधान, और हर मुश्किल से बड़ा. पर आज सोचती हूँ... क्या आपके भी कुछ सपने थे ? या फिर हमारे सपनों को पूरा करते-करते आपने अपने सपनों का हिसाब रखना ही छोड़ दिया ? मैंने कभी पूछा नहीं. शायद इसलिए कि बच्चों को पापा दिखाई देते हैं, उनके भीतर का इंसान नहीं. आज जब खुद को कभी मुश्किलों में पाती हूँ, या जीवन की दौड़ में थक जाती हूँ, तो बरबस आपकी याद आ जाती है. याद आता है कैसे बचपन में

प्रिय पापा, कहते हैं, हर कहानी का एक नायक होता है. मेरी कहानी में भी है... फर्क बस इतना है कि वो कभी मंच पर नहीं आया,

आपको संघर्षों के दौर से मुस्कुराते हुए गुजरते देखा था. तब समझ नहीं पाती थी कि वह मुस्कान कितनी कीमती थी. आज समझती हूँ— वह मुस्कान खुशी की नहीं, हौसले की थी. उसने सिखाया कि हालात चाहे जैसे भी हों, हार मानना विकल्प नहीं होता. आज समझती हूँ, आपने मुझे चलना नहीं सिखाया था, आपने मुझे गिरकर फिर उठना सिखाया था. आज जब आईने में अपनी उम्र दिखने लगी है, तब कहीं जाकर आपके चेहरे की थकान समझ आने लगी है. शायद उम्र समझ भी साथ लेकर आती है. अब महसूस होता है— आपने हमें सिर्फ जीवन नहीं दिया, जीने का साहस भी दिया. सिर्फ सपने नहीं दिए, उन्हें पूरा करने का विश्वास भी दिया. आपने मुझे चलने के लिए रोक पाती, तो आपसे बस इतना पूछती— ‘पापा, क्या आपने कभी अपने लिए भी कुछ चाहा था ?’ और फिर शायद किसी जवाब की प्रतीक्षा किए बिना आपका हाथ थाम लेती... क्योंकि कुछ सवालों के जवाब शब्दों में नहीं, पूरी जिंदगी में छिपे होते हैं.

फादर्स डे पर कविताएं

पिता होते हैं महान

पिता होते हैं महान . समुद्र से गम्भीर हिम से अटल दुःखों में होते कभी न विचल ऊपर से कटोर अन्दर कोमल हृदय से विशाल , मन के सरल सिखाते त्याग बलिदान . पिता होते हैं महान ..

माँ धरा तो पिता आकाश बच्चों का है आत्मविश्वास माँ दीपक तो पिता प्रकाश माँ जीवन पिता देता स्वोस अनेक गुणों की खान . पिता होते हैं महान ..

पिता मुख से बोलते नहीं मन की बात जान लेते हैं. बच्चों की हर खाहिश को पूरा करने की ठान लेते हैं देते हैं अपूर्व ज्ञान . पिता होते हैं महान ..

पिता होते हैं वेद - पुराण करते संस्कार - निर्माण बच्चों के सुख के लिए चलते रहते अथक पाँव हर मुश्किल आसों करते नहीं देखते धूप और छाँव करते श्रम का अनुदान . पिता तुम हो महान ..

पिता गाइड है और रक्षक आलोचक हैं तो प्रशंसक व्यवस्थापक . सुप्रबन्धक दूरदर्शी और मार्ग दर्शक बच्चों का हैं अभिमान पिता होते हैं महान .



आशा जाकड़ 'आस'



मेरे पिता : एक अधूरी ग़ज़ल नहीं, पूरा महाकाव्य

(श्रद्धेय श्री बद्रीश मिश्रा की स्मृति में)



डॉ. अमृता अवस्थी

कुछ लोग जीवन जी जाते हैं, कुछ जीवन का अर्थ बता जाते हैं, कुछ विरते ऐसे होते हैं, जो स्वयं एक पाठ बन जाते हैं— मेरे पिता ऐसे ही थे ... बेगम अख़्तर की ग़ज़लों में, मेहदी हसन के सुर में थे, शेर, ग़ज़ल, साहित्य, इतिहास— उनके जीवन के स्वर में थे। सुरों से संस्कार तक का यह सफ़र— मेरे पिता ऐसे ही थे ... गीता जिनकी ज्योति रही, मानस जिनका मान रहा, धर्म नहीं था केवल वाणी, कर्म ही जिनका प्राण रहा। विचार और व्यवहार का सुंदर समन्वय— मेरे पिता ऐसे ही थे ... ऊँच-नीच का भेद न जाना, सबको एक समान रखा, अपने हिस्से धूप समेटे। औरों को वरदान रखा।

स्वयं तपकर औरों को छाया देना— मेरे पिता ऐसे ही थे ... कितनों की राहों में दीपक बन, कितनों का सबल बनते थे, गिरते हुए मन, टूटे सपनों को, अपनेपन से चुनते थे। दूसरों के लिए जीने का नाम ही जीवन है मेरे पिता ऐसे ही थे ... पर दुनिया ने कब पहचाना, निस्वास्थ्य ही थाती को, फिर भी वे हैंसकर कहते थे— मत तौलो नेकी की सीगातों को। देकर भूल जाना ही जिनकी रीति थी— मेरे पिता ऐसे ही थे ... ‘यह कलपुग नहीं, करुणग है,’ उनका जीवन मंत्र था, देकर भूलो, चलते जाओ, नेकी से बढ़कर तंत्र नहीं। कर्म ही पूजा, कर्म ही साधना— मेरे पिता ऐसे ही थे ...

क्लास by बड़े भाई

सीखेंगे तो तब, जब..



संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

मैं जब भी कहीं अपने सत्र लेने जाता हूँ तो वहाँ के पदाधिकारियों के साथ लंच या डिब्बर का अवसर कभी नहीं छोड़ता क्योंकि यहाँ पर हम कुछ चर्चाएँ क़ लेते हैं परिचय और गहरा हो जाता है.. कार्यक्रम पर प्रतिक्रिया पता चलती है जिससे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिलता है.. तो ऐसे ही किसी सत्र में मेरा जान हुआ था उन सज्जन ने किसी चर्चा पर ही सीखने को लेकर बड़ी सुन्दर बात कही थी.. उन्होंने एक किस्सा बताया उन्होंने कहा एक इलेक्ट्रॉनिक आइटम सुधारने की दूकान थी..उनके पास एक लड़का रोज़ सीखने आता था.. वो दिन भर उनके पास बैठा रहता था.. उनकी दूकान के बगल से एक सब्जी की दूकान थी.. सब्जी के मालिक ने एक लड़का सब्जी बेचने के काम पर रखा हुआ था.. लेकिन उस लड़के को इलेक्ट्रॉनिक कामों में बहुत रुचि थी..वह वही बैठे बैठे उस दुकानदार को काम करते देखता रहता था..

वो लड़का जो सीखने आता था वो कुछ भी नहीं सीख पाया..वो भी इतना बढिया ट्रेनर पाकर.. वहाँ वो लड़का जो सब्जी बेचने से समय चुराकर काम देखता था.. कुछ ही समय में एक बड़ा इलेक्ट्रीशियन बन गया और उसने कुछ ही समय में एक बड़ा कारोबार खोल लिया..

उन सज्जन ने आगे कहा कि यहाँ से एक सीखने वाली बात निकल कर आती है कि जिस काम में आपकी रुचि नहीं है उस काम की बारिकिया आप में कभी उतर ही नहीं पाएंगी कि आप उसके मास्टर हो जाओ.. वहीं अगर रुचि है तो आपका थोडा देखना भी, थोडा अभ्यास भी आपको मास्टर बना देगा..

छोटे भाई, कितनी अच्छी बात थी न.. छोटे भाई, कहना यह चाहता हूँ कि यदि प्यास होगी तभी पानी पी पाएंगे अगर प्यास नहीं होगी तो पानी किसी काम का नहीं..

दिन भर कहीं बैठे रहने से कुछ नहीं होगा.. आपके पास ठेस वजह होनी चाहिए कि क्यों आपको अमुक काम सीखना है.. वजह जितनी ठेस होगी आप उतना ही जल्दी सीखेंगे..यानि सीखेंगे तब, जब उसको सीखने में रुचि होगी..धन्यवाद

कविता

पिता हमारा अभिमान हैं

पिता जीवन हैं, संबल हैं, शक्ति हैं
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति हैं

पिता उंगली पकड़े बच्चे का सहारा हैं
पिता कभी कुछ खट्टा, कभी खारा हैं

पिता पालन हैं, पोषण हैं, पारिवार का अनुशासन हैं
पिता धौंस से चलने वाला प्रेम का प्रशासन हैं

पिता रोटी है, कपड़ा हैं, मकान हैं
पिता छोटे से परिदे का बड़ा आसमान हैं

पिता अपदर्शित अनन्त प्यार है
पिता है तो बच्चों को इंतजार है

पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं
पिता है तो बाज़ार के सब खिलौने अपने हैं

पिता परमात्मा की जगत के प्रति आसक्ति है
पिता गृहस्थ आश्रम में उच्च स्थिति की भक्ति है

पिता अपनी इच्छाओं का हनन और परिवार की पूर्ति हैं
पिता रक्त में दिये हुए संस्कारों की मूर्ति हैंपरिवार

पिता एक जीवन को जीवन का दान है
पिता दुनिया दिखाने का अहसान है

पिता सुरक्षा है, मिर पर हाथ है
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है

तो पिता से बड़ा तुम अपना नाम करो
पिता का अपमान नहीं, उन पर अभिमान करो

